भारत में रबी दलहन परिदृश्य

पीले मटर की खेती अधिक फायदा देती

● डॉ. ए. के. शिवहरे, संयुक्त निदेशक
दलहन निदेशालय, केन्द्रीय कृषि मंत्रालय

मटर की खेती सब्जी और दाल के लिये उगाई जाती है। मटर दाल की आवश्यकता की पूर्ति के लिये पीले मटर का उत्पादन करना अति महत्वपूर्ण है, जिसका प्रयोग दाल एवं बेसन के रूप में अधिक किया जाता है। पीला मटर की खेती वर्षा आधारित क्षेत्र में अधिक लाभप्रद है।

फसल स्तर

मटर विश्व में बीन व चने के बाद तीसरी मुख्य दलहन फसल है और भरत में रबी दलहन में चना व मसूर के बाद तीसरी मुख्य फसल है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत विश्व में चौथे स्थान (10.53%) व उत्पादन में पाँचवे (6.96%) स्थान पर आता है। (FAO Stat., 2014).

12वीं पंचवर्षीय योजना (2012–2015) मे मटर का कुल क्षेत्रफल 11.50 लाख हे. व उत्पादन लगभग 10.36 लाख टन है। उत्तर प्रदेश मुख्य मटर की खेती करने वाला राज्य है। यह अकेला लगभग 49 प्रतिशत भागीदारी मूल उत्पादन में रखता है। उतर प्रदेश के अतिरिक्त मध्य प्रदेश, बिहार व महाराष्ट्र राज्य मुख्य मटर उत्पादक राज्य हैं। (डीईएस 2015.16)।

उपज अन्तर

सामान्यतः यह देखा गया है कि अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन की पैदावार व स्थानीय किस्मों की उपज में लगभग 24 प्रतिशत का अन्तर है। यह अन्तर कम करने के लिये अनुसंधान संस्थानों व कृषि विज्ञान केन्द्र की अनुशंसा के अनुसार उन्नत कृषि तकनीक को अपनाना चाहिए।

राज्यवार प्रमुख प्रजातियों का विवरण

राज्य	प्रजातियाँ
महाराष्ट्र	जे.पी. 885, अंबिका, इंद्रा (के.पी.एम.आर.–400), आदर्श (आई.पी.एफ.99–25), आई.पी.एफ.डी. 10–12
गुजरात	जे.पी. 885, आई.पी.एफ.डी. 10–12 इन्द्रा, प्रकाश
पंजाब	जय (के.पी.एम.आर.–522), पंत मटर–42, के.एफ.पी. –103, उत्तरा (एच.एफ.पी. 8909) अमन (आई.पी.एफ. 5–19)
हरियाणा	उत्तरा (एच.एफ.पी.–8909), डी.डी.आर.–27 (पूसा पन्ना), हरीयाल (एच.एफ.पी.–9907 बी), अलंकार, जयंती (एच.एफ.पी.–8712) (आई.पी.एफ. 5–19)
राजस्थान	डी.एम.आर.–7 (अलंकार), पंत मटर–42
मध्यप्रदेश	प्रकाश (आई.पी.एफ.डी.1–10), विकास (आई.पी.एफ.डी.99–13)
उत्तरप्रदेश	स्वाती (के.पी.एफ.डी. –24), मालवीय मटर (एच.यू.डी.पी.–15), विकास, सपना, (के.पी.एम.आर.–1441), आई.पी.एफ. 4–9
बिहार	डी.डी.आर.–23 (पूसा प्रभात) वी.एल. मटर 42
छत्तीसगढ़	शुभ्रा (आई.एम.–9101), विकास (आई.पी.एफ.डी.99–13),पारस, प्रकाश
उत्तराखंड	पंत मटर–14, पंत मटर–25, वी.एल. मटर 47
झारखंड	पंत मटर–42, वी.एल. मटर 42

स्त्रोतः सीडनेट, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय , भारत सरकार एवं भा.द.अनु.सं.–भा.कृ.अनु.प., कानपुर

राज्यवार प्रमुख प्रजातियों की अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अंतर्गत पैदावार निम्न तालिका में दर्शायी गयी है–

राज्य	प्रयुक्त प्रजाति		उपज (कि.ग्रा./हे.)		प्रतिशत अधिक (लोकल से)
	उन्नत	स्थानीय किसान उपज	उन्नत	स्थानीय किसान उपज	
बिहार	एच.यू.डी.पी–15	स्थानीय	1960	1602	22.35
	डी.डी.आर.–23		1523	1264	20.49
छत्तीसगढ़	अंबिका	स्थानीय	1044	760	37.37
	रचना		1002	733	36.70
	जे.एम.–6		883	714	23.67
उत्तर प्रदेश	एच.यू.डी.पी–15	स्थानीय	1376	1135	21.23
	आई.पी.एफ. 99–25		1263	1135	11.28
	मालवीय मटर		1889	1348	40.13
	डी.पी.एल.–62		1458	1146	27.23
	के.पी.एम.आर.–522		2134	1783	19.69
	के.पी.एम.आर.–400		1842	1657	11.16
जम्मू कश्मीर	प्रकाश	स्थानीय	550	500	10.00
	रचना	–	826	685	20.57
त्रिपुरा	एच.यू.डी.पी–15	स्थानीय	1192	1290	–7.56
	टी.आर.सी.पी. 8	–	1641	1445	13.53
उत्तराखंड	पंत मटर–42	स्थानीय	541	355	52.39
मणिपुर	रचना	स्थानीय	826	719	14.88

स्त्रोतः भा.द.अनु.सं.–भा.कृ.अनु.प., कानपुर, वर्ष 2007–08 से 2011–12 का औसत

भूमि का चुनाव

मटर की खेती सभी प्रकार की भूमियों में की जा सकती है परंतु अधिक उत्पादन हेतु दोमट और बलुई भूमि जिसका पी.एच.मान 6–7.5 हो तो अधिक उपयुक्त होता है।

भूमि की तैयारी

खरीफ फसल की कटाई के पश्चात एक गहरी जुताई कर उसके बाद दो जुताई कल्टीवेटर या रोटावेटर से कर खेत को पाटा चलाकर समतल और भुरभुरा तैयार कर लें। दीमक, तना मक्खी एवं लीफ माइनर की समस्या होने पर अंतिम जुताई के समय फोरेट 10जी 10–12 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर खेत में मिलाकर बुवाई करें ।

बुआई समयः 15 अक्टूबर से 15 नवम्बर

बीज मात्राः ऊंचाई वाली किस्म – 70–80 कि.ग्रा./हे.

बौनी किस्में – 100 कि.ग्रा./हे.

बुआई की विधि

बुवाई कतार में नारी हल, सीडड्रिल, सीड कम फर्टीड्रिल से करें।

बोने की गहराईः 4 से 5 से.मी.

कतार से कतार एवं पौधों से पौधों की दूरीः ऊंचाई. वाली किस्म 30–45 से.मी.

बौनी किस्म 22.5–10 से.मी.

बीजोपचार

बीज जनित रोगों से बचाव हेतु फफूंदनाशक दवा थायरम+कार्बेन्डाजिम (2,1) 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज और रस चूसक कीटों से बचाव हेतु थायोमिथाक्साम 3 ग्राम प्रति किलो ग्राम बीज दर से उपचार करें उसके बाद वायुमण्डलीय नत्रजन के स्थिरीकरण के लिये राइजोबियम लेग्यूमीनोसोरम और भूमि में अघुलनशील फास्फोरस को घुलनशील अवस्था में परिवर्तन करने हेतु पी.एस.बी. कल्चर 5–10 ग्रा./कि.ग्रा. बीज की दर से उपचार करें। जैव उर्वरकों को 50 ग्राम गुड़ को आधा लीटर पानी में गुनगुना कर ठंडा कर मिलाकर बीज उपचारित करें ।

उर्वरक प्रबंधन

ऊँचाई वाली किस्मों के लिए नत्रजन की मात्रा 20–30 कि.ग्रा./हे. व बोनी किस्मों के लिए 40 कि.ग्रा. नत्रजन/हे. आधार उर्वरक के रूप में दें। फास्फोरस व पोटाश की मात्रा को भी आधार उर्वरक के रूप में मृदा परीक्षण के आधार पर दें। अगर मृदा में फास्फोरस व पोटाश की कमी हो तो ऊंचाई वाली किस्मों के लिए 40 कि.ग्रा./हे. फास्फोरस व बोनी किस्मों के लिए 40–60 कि.ग्रा./हे. फास्फोरस दें तथा पोटाश की मात्रा 20–30 कि.ग्रा. व सल्फर 20 कि.ग्रा. /हे. की दर से दें। सभी उर्वरकों के मिश्रण को कतार से 4–5 से.मी. दूरी पर व बीज से नीचे दें। जिन मृदाओं में जिंक की कमी हो उन मृदाओं में 15 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट/हे. दें।

सिंचाई

मृदा में उपलब्ध नमी व शरद कालीन वर्षा के आधार पर फसल को 1–2 सिंचाई की आवश्यकता प्रारंभिक अवस्था में होती है। प्रथम सिंचाई 45 दिन पर व दूसरी सिंचाई अगर आवश्यक हो तो फली भरते समय पर करें।

कटाई एवं गहाई

मटर की कटाई का कार्य फसल की परिपक्वता के पश्चात् करें। जब बीज में 15 प्रतिशत तक नमी रहे उस स्थिति में गहाई कार्य करें।